तात्पर्य

अष्टांगयोग के अभ्यास का प्रयोजन मन को वश में करना है, जिससे मानव योनि की प्रयोजनसिद्धि में वह बन्धु का सा कार्य करे। मन का संयम किए बिना योगाभ्यास करना समय का केवल नाश है। मन को वश में न कर सकने वाला निरन्तर अपने परम शत्रु के साथ रहता है। इस प्रकार उसका जीवन और लक्ष्य, दोनों नष्ट हो जाते हैं। जीव का स्वरूप स्वामी की आज्ञा का पालन करना है। अतः जब तक चित्त न जीता हुआ शत्रु है, तब तक उसे काम, क्रोध, लोभ और मोह आदि की आज्ञा का पालन करना पड़ता है। परन्तु मन के संयमित हो जाने पर परमात्मा रूप से हृदय में विराजमान श्रीभगवान् की आज्ञा-पालन में वह अपने-आप प्रवृत्त हो जाता है। हृदय में परमात्मा से संयोग कर उनका आज्ञा-पालन करना ही सच्चा योगाभ्यास है। जो साक्षात् कृष्णभावनामृत के आश्रित हो जाता है, भगवत्-आज्ञा के प्रति उसकी पूर्ण शरणागति अपने-आप सिद्ध हो जाती है।

जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः।।७।।

जित आत्मनः=जीते हुए मन वाले; **प्रशान्तस्य**=शान्त पुरुष के लिए **परमात्मा**=परमात्मा; **समाहितः**=पूर्णरूप से प्राप्त है; **शीत**=सर्दी, **उष्ण**=गर्मी; **सुख**=सुख; **दुःखेषु**=दुःख में; **तथा**=और; **मान**=सम्मान; **अपमानयोः**=अपमान में।

अनुवाद

जीते हुए मन वाले को परमात्मा नित्य प्राप्त हैं, क्योंकि वह शान्तिलाभ कर चुका है। ऐसे पुरुष के लिए सुख-दुःख, शीत-ताप, मान-अपमान आदि एक समान हो जाते हैं।।७।।

तात्पर्य

परमात्मा के रूप में सब जीवों के हृदय में बैठे श्रीभगवान् की आज्ञा का पालन करना ही जीवमात्र का सच्चा लक्ष्य है। जब मन बहिरंगा माया शक्ति से मोहित हो जाता है, तब जीव जड़ क्रियाओं के बन्धन में पड़ जाता है। अतः जैसे ही किसी एक योगपद्धति के द्वारा मन वश में आता है, वैसे ही उसे लक्ष्य की प्राप्ति हो जाती है, ऐसा जानना चाहिए। जीव के लिए भगवत्-आज्ञा का पालन अनिवार्य है। परा प्रकृति पर मन के एकाग्रित हो जाने पर तो भगवत्-आज्ञा को शिरोधार्य और कार्यान्वित करने के अतिरिक्त जीव के लिए कोई विकल्प ही नहीं रहता। मन को तो किसी न किसी उच्च आदेश को मानकर उसका पालन करना है। अतः मन का संयम होने पर जीव स्वाभाविक रूप में परमात्मा का आज्ञा-पालन करता है। कृष्णभावनाभावित भक्त को यह स्थिति बिना विलम्ब सुलभ हो जाती है। इसी से वह सुख-दुःख, शीत-ताप आदि सांसारिक द्वन्द्वों से प्रभावित नहीं होता। यह अवस्था आचारात्मक समाधि अथवा परतत्त्व में निमग्नता है।